नई कविता : स्वरूप एवं प्रवृतियां
हिन्दी प्रतिष्ठा तृतीय वर्ष (पत्र-5) के लिए।

हिंदी काव्य में प्रयोगवाद के बाद नई कविता का दौर शुरू होता है। स्वतंत्रता के उपरांत लिखी गई हुए कविताएं जिनमें नए भाव बोध, नए मूल्य एवं नए शिल्प विधान को अपनाया गया नई कविता के नाम से जानी गई। आलोचकों का एक वर्ग यह भी मानता है कि प्रयोगवाद का विकास हीं आगे चलकर नई कविता के रूप में हुआ। वस्तुतः अधिकांश प्रयोगवादी कवि नए कवि के रूप में जाने गए जिससे यह धारणा पुष्ट हुई कि प्रयोगवाद का ही अगला चरण नई कविता है। मोटे तौर पर 1953 ई. के बाद की कविताओं को नई कविता का नाम दिया गया है।

बालकृष्ण राव और गिरिजाकुमार माथुर समस्त छायावादोत्तर काव्य को नई कविता के अंतर्गत मानते हैं। जबकि डॉ. रामविलास शर्मा और डॉ. नामवर सिंह नई कविता को प्रयोगवाद का छद्म (बनावटी) रूप स्वीकारते हैं। नरेश मेहता और श्रीकांत वर्मा नई कविता को प्रयोगवाद से सर्वथा अलग मानते हैं। सर्वाधिक संतुलित दृष्टिकोण यह है कि प्रयोगवाद के बिखराव को नई कविता में काट-छांट कर एक सजा संवरा स्वरूप प्रदान किया गया जिसमें व्यवस्था और संतुलन दोनों हैं। प्रयोगवाद में जहां अतिशय बौद्धिकता एवं प्रयोगशीलता

थी वही नई कविता में इसके अतिरेक से बचने का प्रयास किया गया। उसमें रस का अभाव नहीं है। साथ ही प्रयोग वैचित्र्य के स्थान पर नवीन शिल्प को उसमें महत्व दिया गया है। नई कविता जीवन के हर पक्ष से जुड़ी हुई है। एक ओर उसमें आस्था का स्वर है तो दूसरी ओर अनास्था की अभिव्यक्ति। जीवन के हर्ष-विषाद, राग-विराग, आसक्ति-अनासक्ति सबको वह अपने में समेटे हुए दिखाई देती है। मुक्तिबोध ने नई कविता के विषय वैविध्य के बारे में लिखा है, "नई कविता वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस व्यक्ति की प्रतिक्रिया है। नई कविता का स्वर एक नहीं विविध हैं। नई कविता जीवन के यथार्थ की ओर उन्मुख है और मानव जीवन की समस्त विशेषताओं से संपृक्त है। धर्मवीर भारती के अनुसार, "नई कविता प्रथम बार समस्त जीवन को व्यक्ति या समाज इस प्रकार के तंग विभाजनों के आधार पर न मापकर मूल्यों की सापेक्ष स्थिति में व्यक्ति और समाज दोनों को मापने का प्रयास कर रही है।"

नई कविता में नवीन विषयों का समावेश तो विषय वस्तु के स्तर पर किया ही गया है। साथ ही वह शिल्प के स्तर पर भी नवीनता लिए हुए है। कथन की नई भंगिमाओं, नये प्रतीकों, नये बिम्बों का प्रयोग उसमें किया गया है। नई कविता ने छंद के बंधन को पूरी तरह अस्वीकार करते हुए मुक्त छंद में अभिव्यक्ति की। जिसमें अस्तित्ववाद की मान्यताएं भी है

और भाषागत सहजता भी है। नई कविता ने मानव को उसके समूचे परिवेश में देखा। वह परंपरा का विरोध विद्रोह के स्तर पर नहीं करती है। नए कवियों में परंपरा बोध है पर वह उसे विकसित करता हुआ नवीन जीवन मूल्यों से जोड़ता है। नए कवि ने यद्यपि परंपराओं को तोड़ा भी है तथा परम्परित होने के कारण विरोध ऐसा सिद्धांत नए कवियों का नहीं है।

नई कविता में जीवन को समग्रता से देखा गया उसके एकांगी रूप को नहीं। नई कविता किसी वाद या सिद्धांत के संकुचित घेरे में बंधी हुई नहीं है जैसे कि प्रयोगवादी एवं प्रगतिवादी कविताएं थी।

नई कविता में दो तत्व प्रमुख हैं- अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि। कवि पहले विषय या अनुभूति को आत्मसात करता है और फिर उसे पूरी ईमानदारी के साथ व्यक्त कर देता है। युगबोध से जुड़ा हुआ कवि का व्यक्तित्व अपनी अनुभूति में सबकी अनुभूति का समावेश कर लेता है क्योंकि उसे लोक हृदय की पहचान होती है। इसीलिए वह व्यक्ति की पीड़ा के माध्यम से समषटि की पीड़ा को अभिव्यक्त कर पाता है।

नई कविता में क्षण का महत्व विशेष रुप से दिखाई देता है। क्षण बोध के कारण नयी कविता का कवि अनुभूत होने वाले जीवन के सुख-दुख को, आशा-निराशा को, राग-विराग को, अभिव्यक्त करता है। अनुभूति पूर्ण होने पर जीवन के सामान्य

से दिखने वाले प्रश्न भी नए कवि की कलम का स्पर्श पाकर नया अर्थ पा लेते हैं। नई कविता आकार में भले ही छोटी हो किंतु उनकी विषय क्षेत्र व्यापक है।

यहाँ अधिकांश कवि अपनी धरती और अपने लोगों से जुड़े हैं। ग्रामीण एवं शहरी जीवन की अभिव्यक्ति उनमें है। यह कविताएं जीवन के विविध अनुभवों से अद्‌भुत है। यह मानने के पर्याप्त कारण है कि नई कविता में अनास्था, संत्रास, कुंठा, निराशा आदि का स्वर विद्यमान है। किंतु नई कविता में संवेदना के जो विषय लिए गए हैं वे भारतीय जनता की स्थिति से संपृक्त कवि की विविध संवेदनाएं हैं। हिंदी के नए कवियों में प्रमुख है- अज्ञेय, मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, धर्मवीर भारती, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, कुंवर नारायण, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, प्रभाकर माचवे, विजयदेव नारायण साही, रघुवीर सहाय, नरेश मेहता, बालकृष्ण राव, कीर्ति चौधरी इत्यादि।

नई कविता में प्रकृति प्रेम, सौंदर्य बोध आदि भी विद्यमान हैं। नीए बिम्बों, प्रतीकों एवं संवेदनाओं का यहां सागर दिखता है।

आवश्यक निर्देश- छात्र-छात्राओं को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह से अन्य पाठों का भी भली प्रकार अध्ययन कर पाठ के केंद्रीय भाव को समझें। उससे संबंधित प्रश्न-उत्तरों का अभ्यास करते रहें।

विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं। जिसका अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।)

डॉ. बद्रीनारायण सिंह
समन्वयक हिन्दी, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना ।।